लघु नाटिका

कर्मों का साक्षात्कार

पात्र-परिचय : सेठ रत्नलाल – शहर का बड़ा सेठ, छज्जू और रज्जू – सेठ के परिचित, सेठ जी के दो बेटे, दो बहुएँ, एक पोता और एक नौकर, माणिकलाल – ब्रह्माकुमार भाई, धर्मराज, धर्मराज के दो सेवक, चित्रगुप्त

(सेठ रत्नलाल जी अपने मकान के बरामदे में चिन्तामगन स्थिति में टहल रहे हैं)

माणिकलाल – सेठ जी, राम-राम। आइये ना, ठण्डी हवा में सैर भी हो जायेगी, कुछ पुण्य का खाता भी जमा हो जायेगा, मेरे साथ ब्रह्माकुमारी आश्रम चलिए ना!

सेठ जी *(चिन्तातुर भावों के साथ)* **–** भाई, बात तो आपकी सही है पर कई दिनों से कोई धंधा सेट नहीं बैठ रहा, घाटा ही घाटा चल रहा है। थोड़ी सेटिंग होने दो फिर चलूँगा।

दूसरा दृश्य

(बरामदे में खड़े सेठ रत्नलाल सुबह-सुबह नौकर को कुछ हिदायतें दे रहे हैं)

माणिकलाल – अरे सेठ जी, बधाई हो! अबकी बार तो आपका धंधा चल पड़ा, अब तो चिन्ता मिट गई, अब तो चलिए कुछ पारलौकिक कमाई भी कर लीजिए।

सेठ जी – भाई, सब आप लोगों की और प्रभु की मेहरबानी है, धंधा चल तो पड़ा पर थोड़ा जम जाने दो, फिर तो आपके ही साथ चलना है, और करना क्या है?

तीसरा दृश्य

(सेठ रत्नलाल अपनी नई कोठी के सामने बने बगीचे में कुर्सी पर बैठे बही-खाते देख रहे हैं)

माणिकलाल – सेठ जी, अब तो आपका धंधा जम गया, ऐसा जम गया कि कई पीढ़ियों का प्रबंध हो गया, अब तो आप भगवान के लिए कम-से-कम एक घंटा तो निकालिए।

सेठ जी – भाई, क्या बताऊँ, धंधा इतना बढ़ गया है कि साँस लेने की भी फुर्सत नहीं। पहले थोड़ा टहल लिया करता था, अब तो सुबह-सुबह ही बही-खातों में उलझना पड़ता है। धंधा है तो यह सब करना ही पड़ता है। इसे छोड़ कैसे इधर-उधर जा सकता हूँ?

माणिकलाल *(मन ही मन)* **–** अजीब आदमी है, धंधा नहीं था तो भगवान के लिए फुर्सत नहीं, धंधा लग गया तो भी भगवान के लिए फुर्सत नहीं और धंधा जम गया तो भी भगवान के लिए फुर्सत नहीं।

चौथा दृश्य

(कपड़े से ढका सेठ रत्नलाल का शव उसकी कोठी के आंगन में पड़ा है। लोग अंतिम दर्शन की औपचारिकतायें पूरी कर रहे हैं। कोई-कोई फूल अर्पित कर रहा है)

छज्जू *(रज्जू के कान में)* **–** सेठ ने पिछले पाँच साल में इतना कमाया कि अगली दस पीढ़ियों का प्रबंध हो गया पर था बड़ा कंजूस। कभी ईश्वर अर्थ एक आना भी नहीं निकाला।

रज्जू *(छज्जू के कान में)* **–** नहीं लगाया तो साथ भी तो लेकर नहीं गया। इसी धरती पर से इकट्ठा किया और इसी धरती पर छोड़ दिया। अब बच्चे जो करें, सेठ कौन-सा टोकने आने वाला है।

दृश्य पाँच

(धर्मराज का दरबार)

चित्रगुप्त – महाराज, मृत्युलोक से आज एक सेठ आपकी पुरी में आये हैं, कहो तो हाज़िर करूँ?

धर्मराज – अवश्य, अवश्य।

(दो सेवक सेठ जी को सूक्ष्म काया में लेकर आते है)

धर्मराज – कहो सेठ, क्या कमाकर लाए। हम हरेक आत्मा से यह आशा करते हैं कि वह साकार दुनिया के रंगमंच पर जाये तो पुण्यों की कमाई से हाथ भरतू करके लौटे, कहो, क्या कमाई करके लाए?

सेठ जी – महाराज, दो कोठियाँ, दस करोड़ नकद बैंक में, चालीस किलो चाँदी, पाँच किलो सोना, दस-दस लाख के पाँच प्लाट, दो फैक्ट्रियाँ – बस यही सब कमाया।

धर्मराज – सेठ जी, वो तो सब नीचे रह गया। आपके साथ क्या आया, इस समय आपकी मुट्ठी में क्या है?

सेठ जी (हाथ मलता है, इधर-उधर झांकता है) – महाराज, मैं तो सब बच्चों, बच्चों के बच्चों ... के लिए छोड़ आया, क्या उसका कोई पुण्य नहीं है?

चित्रगुप्त *(बीच में)* – महाराज, यह देखिये, सेठ जी का कर्म खाता। देशी घी में मिलावट, राशन में मिलावट, नकली माल के असली दाम, कम तौल और कर चोरी ...।

धर्मराज – सेठ जी, ये सब आपने किये? अपने हाथों किए?

सेठ जी – महाराज, किये तो मैंने पर इनका लाभ तो मैंने नहीं लिया। मैंने तो सारा जीवन सीधी-साधी धोती-कुर्ता पहना है, खाना भी कभी खाया, कभी नहीं खाया, नींद भी कभी की, कभी नहीं की और मैंने तो 12 और 14 घंटे भी दुकान की ड्यूटी बजाई पर जो कमाया वह अपने पर तो नहीं लगाया।

धर्मराज – सेठ जी, जिसके हाथों कर्म होते हैं, ज़िम्मेवार तो उसी को माना जायेगा, फल भी वही पायेगा। सेठ जी, फल तो आपको मिलेगा ही। दूसरी बात, ऐसे कर्मों से प्राप्त लाभ भी कोई भले में थोड़े लगता है। चोरी का धन मोरी में ही तो जाता है। विश्वास न हो तो नीचे झाँक कर देख लीजिये।

दृश्य छह

(सेठ जी की कोठी के अंदर का दृश्य – बड़ी बहू, बड़े कमरे को ताला लगा रही है, छोटी बहू चाबी छीनने की कोशिश कर रही है। बड़े लड़के के हाथ में कुछ कागज़ात हैं जिन्हें लेने के लिए छोटा लड़का लपक रहा है, इसी छीना-झपटी में एक कागज़ फट कर नाली में गिरा है। वह किसी प्लाट की रजिस्ट्री का कागज़ है। प्लाट की कीमत दस लाख है। कागज़ के फटने से इस की मिल्कियत खतरे में पड़ गई है। पर अब भी दोनों का झगड़ा और तू-तू-मैं-मैं ज़ारी है, बड़ा पोता अभी-अभी शराब के नशे में झूमता हुआ अन्दर घुसा है पर उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं है)

सेठ जी – हाय, इस प्लाट को लेने में तो मैंने महीने भर का चैन, भोजन और नींद पूरी गँवा दी थी, इसका यह हश्र?

धर्मराज – सेठ जी, आपकी मुट्ठी पुण्य से तो खाली है पर पाप से कमाये धन के पाप का भार आप पर ही है और पाप का जो धन आप नीचे छोड़ आये हैं, उनके कारण आपके पुत्र जो कुकर्म करेंगे, उसके पाप का कुछ हिस्सा भी ब्याज के रूप में आपको मिलता रहेगा क्योंकि ना आप पाप-कमाई करते और ना वे उस कमाई को पाप में लगाते।

सेठ जी – महाराज, एक बार मुझे नीचे जाने की इजाज़त दे दो, मैं कुछ तो दान-पुण्य में लगा आऊँ।

धर्मराज – सेठ जी, शरीर तो आपका जल चुका है, परकाया प्रवेश करेंगे तो लोग आपको भूत समझेंगे, ऐसे में आपके पुत्र-पौत्र भी आपसे डरेंगे ही। अब नीचे जाने से कोई फ़ायदा नहीं। चूँकि कोई पुण्य आपके खाते में नहीं है अत: धनविहीन, शिक्षा और संस्कारविहीन परिवार में आपको जन्म दिया जा रहा है।

सेठ जी – महाराज, यह तो सरासर अन्याय है। कहाँ मैं सेठ और कहाँ ऐसा परिवार, कोई बराबरी नहीं।

धर्मराज – सेठ जी, किसी के घर में कितना भी अनाज हो पर जब तक वह उसे बोये नहीं, वह अनाज बढ़ता नहीं। इसी प्रकार धन चाहे कितना भी क्यों न हो, जब तक उसे भी श्रेष्ठ कार्यों के रूप में बोते नहीं, फल निकलता ही नहीं। पिछले जन्म का बोया बीज ही तो अगले जन्म में फल बनकर मिलता है। देखो तो यह दृश्य (माणिकलाल सेठ जी को ब्रह्माकुमारी आश्रम जाने का निमंत्रण दे रहा है और सेठ जी हर बार बहाना बना रहे हैं – वह दृश्य इमर्ज होता है तथा सेठ के चोरी, मिलावट, झूठ, धोखाधड़ी करते हुए कई दृश्य इमर्ज होते हैं) सेठ जी, इस माणिकलाल बच्चे ने तुमको एक बार नहीं, तीन-तीन बार जागृत किया, फिर भी तुम नहीं चेते, नश्वर धन के लिए तो रात-रात जागे पर सच्ची कमाई, साथ जाने वाली कमाई के लिए एक घंटा भी महंगा पड़ा, तो अब हो क्या सकता है!

(सेठ दृश्य देखकर रोता है, चिल्लाता है, अफसोस करता है। बार-बार माफी माँगता है)

धर्मराज – अब माफी का समय नहीं है, कोई अन्तिम इच्छा हो तो बताइये, पूरी की जायेगी।

सेठ जी – महाराज, मेरी तरफ से इतना ही संदेश धरती पर भिजवा दो – 'मैं करोड़पति सेठ नश्वर धन के लालच और संग्रह में इतना भरमाया कि मैंने आगे के बारे में कुछ नहीं सोचा। ना समय, ना धन, ना तन, ना मन ईश्वरार्थ लगाया। उसके फलरूप आज मैं सब कुछ गँवा कर अभावग्रस्त परिवार में जन्म लेने जा रहा हूँ, मेरे बन्धु मुझसे शिक्षा लें और मेरे जैसी गलती ना करें।'

(समाप्त)